Regd. with Registrar of News Papers of India of PUN BIL 2002/07848: Postal Reg.No.GDP-41/2023-2025

मासिक अन्सारुल्लाह क़ादियान

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

मार्च/2023 ई

MONTHLY ANSARULLAH QADIAN

Magazine of Majlis Ansarullah Bharat

March-2023

Date of Publication: 15-03-2023

Chairman: Ataul Mujeeb Lone | Editor: Hafiz Syed Rasool Niyaz ✆ 9876332272 | Manager: Tahir Ahmad Beg ✆ 9915223313

Annual Subscription: Rs-250/- | Per Issue: Rs-25/- | Weight: 50-100 grams/Issue

20-02-2023 को मुसलीह मौऊद दिवस पर हस्पताल में मरीज़ों को फल वितरण करते हुए अराकीन मज्लिस अंसारुल्लाह जड्चर्ला (तेलंगाना)।

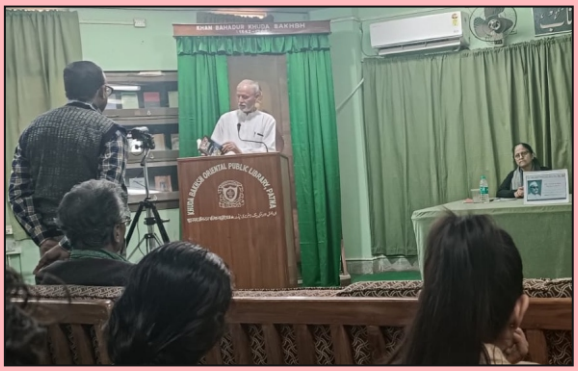

08-02-2023 को खुदा बख्श लाइब्रेरी पटना में World Crisis and Pathway to Peace किताब पर लेक्चर देते हुए श्री शाह महमूद साहिब नाज़िम पटना।

मस्जिद सुबहान (क़ादियान) में बच्चों की तक़रीब बिसमिल्लाह आमीन करवाते हुए श्री मुबाशिर अहमद आमिल साहिब रुकुन मज्लिस अंसारुल्लाह क़ादियान।

26-02-2023 को नायिर हस्पताल मुंबई में डाइपर्स वितरण करते हुए अराकीन मज्लिस अंसारुल्लाह मुंबई (महाराष्ट्र)।

www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

26-01-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह भरतपुर (बंगाल) द्वारा आयोजित पिकनिक का एक दृश्य ।

12-01-2023 सांधन (उत्तर प्रदेश) में आयोजित तालीमुल क़ुरान इजलास के बाद ली गयी एक तस्वीर ।

04-02-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह शिमोगा द्वारा आयोजित वक़ारे अमल का एक दृश्य ।

11-02-2023 को श्री बी प्रशाद साहिब को World Crisis and Pathway to Peace किताब भेंट करते हुए श्री शाह महमूद साहिब नाज़िम पटना ।

09-02-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह जड्चर्ला (तेलंगाना) द्वारा आयोजित कुलू जमीअ का एक दृश्य ।

08-02-2023 को मज्लिस अंसारुल्लाह अलीपुर (बंगाल) द्वारा आयोजित पिकनिक का एक दृश्य ।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ   نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ   وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡۤا اَنۡصَارَ اللّٰہِ

سورۃ الصّف آیت ۱۵

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 21 मार्च 2023 **Issue - 03**

विषय सुचि	पृष्ठ
दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के उपदेश	3
सम्पादकीय : जमाअत का पहचान चिन्ह	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मानव जाति से सहानुभूति	6
सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह का अन्सारुल्लाह यू.के से ख़िताब 18 सितम्बर 2022 ई० (शेष भाग)	8

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक (हिन्दी)

डाक्टर अब्दुल माजिद

09915379255

मैनेजर

ताहिर अहमद बेग

Ph. +91 99152 23313

प्रेस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस

क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 250 ₹

विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान - 143516

ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَ وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۙ وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

(सूरतुल जुमा: आयत 2-3)

अनुवाद: वही है जिसने निरक्षर लोगों में उन्हीं में से एक महान रसूल भेजा जो उन पर उनकी आयतों का पाठ करता है और उन्हें पवित्र करता है। और उन्हें पुस्तक की और विवेकशीलता की शिक्षा देता है जबकि इस से पूर्व वे निश्चित रूप से खुली-खुली पथभ्रष्टता में पड़े थे। और उन्हीं में से दूसरों की ओर भी (उसे भेजा है) जो अभी उनसे नहीं मिले। वह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) परम विवेकशील है।

दर्सुल हदीस

عَنْ اَبِیْ هُرَيْرَةَ رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ قَالَ: قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: وَالَّذِیْ نَفْسِیْ بِيَدِهٖ لَيُوْشِكَنَّ اَنْ يَّنْزِلَ فِيْكُمُ ابْنُ مَرْيَمَ حَكَمًا عَدْلًا فَيَكْسِرُ الصَّلِيْبَ وَيَقْتُلُ الْخِنْزِيْرَ وَيَضَعُ الْحَرْبَ وَيُفِيْضُ الْمَالَ حَتّٰى لَايَقْبَلَهٗ اَحَدٌ حَتّٰى تَكُوْنُ السَّجْدَةُ خَيْرًا مِنَ الدُّنْيَا وَمَافِيْهَا۔

(बुखारी किताबुल अँबिया बाब नुज़ुलुल ईसा इब्ने मरियम)

अनुवाद -हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : क़सम उस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है, जल्द ही तुम में इब्न-ए-मरयम प्रकट होगा, जो सही फ़ैसला करने वाला और न्याय से काम लेने वाला होगा। वह सलीब को तोड़ेग, खिंज़ीर को क़तल करेगा। लड़ाई को समाप्त करेगा। वह इतना धन लुटाएगा, कि कोई उसे स्वीकार नहीं करेगा। ऐसे समय में एक सज्दा दुनिया और समस्त संसार से बेहतर होगा। अर्थात यह भौतिकवाद के विकास का समय होगा।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

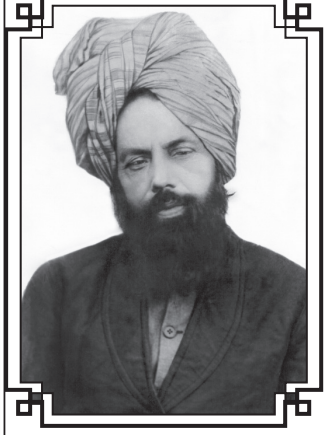

"लोगों के लिए लाभप्रद लोग निश्चित रूप से बचा लिए जाएंगे"

"मैं फिर कहता हूं कि जो लोगों के लिए लाभप्रद हैं और विश्वास और सच्चाई में पूर्ण हैं। उनका उद्धार अवश्य होगा। अत: तुम अपने अंदर इन गुणों को विकसित करो।" (मल्फूज़ात खंड चतुर्थ पृष्ठ 184)

"जितना अधिक पवित्र क़ुरआन ने माता-पिता और बच्चों और अन्य रिश्तेदारों और गरीबों के अधिकारों का वर्णन किया है। मुझे नहीं लगता कि ये अधिकार किसी और पुस्तक में लिखे गए हों।"(चश्मा-ए-मअरफ़त, रूहानी ख़ज़ाइन खंड नंबर 23 पृष्ठ 208)

हदीस में यह भी वर्णित है कि एक सहाबी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि मैंने मूर्खता के दिनों में बहुत ख़र्च किया था क्या इस का पुण्य भी मुझे मिलेगा? आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उत्तर दिया कि यह उसी सदक़ा व खैरात का फल है कि तू मुसलमान हो गया। इससे पता चलता है कि सर्वशक्तिमान ख़ुदा निष्ठा के छोटे से छोटे कार्य को भी व्यर्थ नहीं जाने देता। और यह भी सिद्ध होता है कि सृष्टि के प्रति सहानुभूति और ख्याल रखना अल्लाह के अधिकारों की रक्षा का कारण होती है। (मल्फूज़ात खंड चतुर्थ पृष्ठ 216)

"मेरी तो हालत यह है कि यदि किसी को दर्द होता हो और मैं नमाज़ में व्यस्त हूं और उसकी आवाज़ मेरे कानों तक पहुंच जाए तो मैं चाहता हूँ कि मैं उसकी मदद करूँ भले ही मुझे नमाज़ तोड़नी पड़े और जहां तक हो सके उसके पास पहुंच कर उसको कोई फ़ाएदा दे सकूँ और उसके साथ सहानुभूति करूँ। अपने भाई के संकट और पीड़ा में उसका साथ न देना नैतिकता के विरुद्ध है। यदि आप उसके लिए कुछ नहीं कर सकते तो कम से कम उसके लिए प्रार्थना तो कर ही दें अपने तो छोड़ो मैं तो कहता हूं कि गैरों और हिंदुओं के साथ भी ऐसे आचरण का उदाहरण प्रस्तुत करें और उनके साथ सहानुभूति रखें बेपरवाह स्वभाव नहीं होना चाहिए। एक बार मैं बाहर सैर को जा रहा था, एक पटवारी अब्दुल करीम मेरे साथ था, वह थोड़ा आगे था और रास्ते में एक बूढ़ी 70 या 75 साल की एक कमज़ोर औरत मिली। उसने एक पत्र उसे पढ़ने को कहा परंतु उसने उसे डांट-डपट कर हटा दिया मेरे दिल पर चोट सी लगी, उसने वह पत्र मुझे दिया। मैं इस को लेकर ठहर गया, और इसे पढ़ कर अच्छी तरह से समझा दिया। इस पर वह अत्यंत लज्जित हुआ क्योंकि उसे ठहरना तो पड़ा और पुण्य से भी वंचित रहा।"(मल्फूज़ात खंड चतुर्थ पृष्ठ 82, 83)

"उसके बंदों पर दया करो, अपनी ज़बान या हाथ से उन पर अत्याचार मत करो और सृष्टि की भलाई के लिए प्रयास करो और किसी के प्रति अहंकार मत करो चाहे आपके अधीन हो, किसी को गाली मत दो, भले ही वह तुम्हें गाली दे। गरीब और विनम्र और नेक नियत और सभी से सहानुभूति रखो। बड़े हो कर छोटों पर दया करो न कि उनका अपमान और ज्ञानी हो कर अज्ञानियों का मार्गदर्शन करो न अहंकार करते हुए उनका अपमान। और अमीर हो कर गरीबों की सेवा करो न कि अहंकारी बनो और विनाश के मार्गों से डरो।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ाइन, खंड 19, पृष्ठ 11, 12)

सम्पादकीय

जमाअत का पहचान चिन्ह?

अल्लाह तआला ने मानव जन्म का उद्देश्य अपनी उपासना ठहराया है। अल्लाह तआला ने शुरू से ही नबियों को उपासना की अनिवार्यता और तरीकों की शिक्षा देने के लिए भेजा है। जैसा कि अल्लाह तआला फरमाता है (अन-नह्ल :37) وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُوْلًا اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ

और निश्चित रूप से हमने प्रत्येक क़ौम में (कोई न कोई) रसूल (यह आदेश देकर) भेजा है कि (हे लोगो!) तुम अल्लाह की उपासना करो और सीमा पार करने वालों से दूर रहो।

अत: जिन्होंने ख़ुदा की उपासना की, ख़ुदा तआला ने उन्हें प्राणियों के साथ दया करने की क्षमता प्रदान की और उन्हें इस लोक और परलोक में सफलता प्रदान की। और जिन्होंने ख़ुदा के अधिकारों को पूर्ण नहीं किया, वे भी प्राणियों के अधिकारों को पूर्ण करने से चूक गए और उन्हें असफलता हाथ लगी। नमाज़ के परिणामस्वरूप सफलता प्राप्त होने के बारे में पवित्र कुरआन में कई आयतें हैं। इंसान कामयाबी के लिए कहीं और भागता है, जबकि मुअज़्ज़िन पांच बार ऊंची आवाज़ में पुकार-पुकार कर कहता है, حی علی الصلوٰۃ۔ حی علی الفلاح अर्थात नमाज़ के लिए आओ, यहीं आपको सफलता मिलेगी।

उग रहा है दर-ओ-दीवार से सब्ज़ा ग़ालिब
हम ब्याबां में हैं और घर में बहार आई है

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया :-

اِنَّ اَوَّلَ مَا يُحَاسَبُ بِهِ الْعَبْدُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ مِنْ عَمَلِهٖ صَلٰوتُهٗ، فَاِنْ صَلَحَتْ فَقَدْ اَفْلَحَ وَاَنْجَحَ وَاِنْ فَسَدَتْ فَقَدْ خَابَ وَخَسِرَ.

अर्थात क़यामत के दिन सर्वप्रथम जिस बात का बंदों से हिसाब लिया जाएगा वह नमाज़ है। यदि यह हिसाब ठीक रहा तो वह सफल हो गया और उसने मुक्ति प्राप्त कर ली। यदि यह हिसाब खराब हुआ तो वह असफल हो गया और घाटे में रहा। (तिरमिज़ी किताबुस सलात बाब ان اوّل یحاسب بہ العبد)

इस युग में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के ग़ुलाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने भी नमाज़ को अपना और अपनी जमाअत का पहचान चिन्ह ठहराया है। आप पांच बार की नमाज़ और नैतिक स्थिति से पहचाने जाओगे। एक चेतावनी के रूप में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं :-

"जो कोई पाँच नमाज़े अदा नहीं करता वह मेरी जमाअत में से नहीं है।"(कश्ती नूह, रूहानी खज़ाइन, खंड 19, पृष्ठ 19)

हज़रत मीर मुहम्मद इस्माइल साहिब बताते हैं कि मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अरकान-ए-दीन मीन सर्वाधिक ज़ोर नमाज़ पर देते थे और फरमाते थे कि नमाज़ संवार कर पढ़ा करो। (सीरतुल महदी खंड 3 पृष्ठ 126) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को शुरू से ही नमाज़ के साथ गहरा संबंध और एक स्वाभाविक लगाव था जो उनकी आखिरी सांस तक दिल और दिमाग में बना रहा। आप अलैहिस्सलाम ने इन्हीं स्वाभाविक प्रवृत्तियों को चित्रित करते हुए लिखा है कि :

اَلْمَسَاجِدُ مَكَانِيْ وَالصَّالِحُوْنَ اِخْوَانِيْ
وَذِكْرُ اللّٰهِ مَالِيْ وَخُلُقُ اللّٰهِ عِيَالِيْ

अर्थात मेरा घर समस्त मस्जिदें हैं और समस्त नेक लोग मेरे भाई हैं और मेरा माल ज़िक्र-ए-इलाही है और मेरा कुम्बा मेरा परिवार ख़ुदा की मख़लूक़ है।

फ़रमाया : "हमारी विजयी होने के हथियार इस्तिग़फ़ार, तौबा, धार्मिक ज्ञान से परिचित होना और ख़ुदा तआला की महानता को दृष्टिगत रखना और पांचों वक़्त की नमाज़ों को अदा करना हैं। नमाज़ क़बूलीयत-ए-दुआ की कुंजी है।"(मल्फ़ूज़ात खंड चतुर्थ पृष्ठ 82, 83)

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमीनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं :-

"तुम्हारी सफलता और उन्नति ख़ुदा के साथ संबंधित है और इस का उत्तम माध्यम वक़्त पर नमाज़ों की अदायगी और बाजमाअत नमाज़ों की अदायगी है। यदि आप में से हर एक नेकी को क़ायम करने वाला और बुराई को रद्द करने वाला और नमाज़ों को क़ायम करने वाला बन जाए तो समझ लें कि आप सफल हो गए।"

(अलफ़ज़ल 30 अगस्त 2003)

अल्लाह तआला इन उपदेशों का पालन करने का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

(हाफिज़ सय्यद रसूल नयाज़)

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम और मानव जाति से सहनुभूति

हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस बात पर ज़ोर दिया कि अब वक़्त की ज़रूरत क़लम की है तलवार की नहीं। अब वक़्त आ गया है कि अपनी लिखनीय योग्यताओं को साईंस के क्षेत्र में प्रयोग करें और इस्लाम के आध्यात्मिक चमत्कार दिखाए जाएं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उर्दू, अरबी और फ़ारसी में 91 पुस्तकें प्रक्षित कीं। आप ने अलहकम और रिव्यू आफ़ रेलीजन की बुनियाद डाली। आपकी महान पुस्तक बराहीन-ए-अहम-दिया है। इन पुस्तकों का आधार कलाम-ए-इला-ही अर्थात क़ुरआन-ए-करीम है और ये पुस्तकें हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सत्यापन पर आधारित हैं। 1882 ई० में अल्लाह तआला आपको अपने मिशन की पूर्णता के लिए चुनते हुए फ़रमाता है :-

يَا اَحْمَدُ بَارَکَ اللّٰہ فِیْکَ۔ قُلْ اِنِّیْٓ اُمِرْتُ وَ اَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِیْنَ۔یَنْصُرُکَ رِجَالٌ نُّوْحِیْٓ اِلَیْھِمْ مِّنَ السَّمَآءِ۔

(रुहानी ख़ज़ाइन खंड 17 पृष्ठ 353-351)

23 मार्च 1889 ई० को दारुल बैअत लुधियाना में चालीस निष्ठावानों की बैअत लेकर जमाअत अहमदिया की बुनियाद रखी। आप हैं :-

"वह कार्य जिसके लिए ख़ुदा ने मुझे मामूर किया है वह यह है कि ख़ुदा में और उस की सृष्टि के संबन्धों में जो अपवित्रता घटित हो गई है इस को दूर कर के प्रेम और शिष्टाचार के संबंध को दुबारा स्थापित करूँ और सच्चाई के प्रदर्शन से धार्मिक युद्धों का समापन करके सुलह की बुनियाद डालूं।"

(लैक्चर लाहौर, रुहानी ख़ज़ाइन खंड 20 सफ़ा 180)

ख़ुदा को पहचानने और वाहिद ला शरीक ख़ुदा की इबादत करने की ओर लोगों को बहुत दर्दमंदाना रूप से लोगों को ध्यान दिलाते हुए आप अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :

"यह ज़िंदगी का चशमा है जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ और किस तरह इस ख़ुशख़बरी को दिलों में बैठा दूं। किस दफ़ से मैं बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा यह ख़ुदा है ता लोग सुन लें और किस दवा से मैं ईलाज करूँ ता सुनने के लिए लोगों के कान खुलीं।"

(कशती नूह, रुहानी ख़ज़ाइन जिल्द 19 पृष्ठ 22)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

"अत: सृष्टि से सहानुभूति एक ऐसी चीज़ है कि यदि मनुष्य उसे छोड़ दे और इस से दूर होता

जाए तो धीरे-धीरे फिर वह जानवर बन जाता है। इन्सान की इन्सानियत की यही मांग है और वह उसी समय तक इन्सान है जब तक अपने दूसरे भाई के साथ प्रेमपूर्वक, सदव्यवहार और उपकार से काम लेता है और इस में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं जैसा कि सादी ने कहा है:-

बनी आदम आज़ा-ए-यक दीगर अंद। मैं यह नहीं कहना चाहता कि तुम अपनी हमदर्दी को सिर्फ मुस्लमानों से ही विशिष्ट करो, नहीं। मैं कहता हूँ कि तुम ख़ुदा तआला की सारी मख़लूक़ से हमदर्दी करो चाहे कोई हिंदू हो या मुस्लमान। मैं कभी ऐसे लोगों की बातें पसंद नहीं करता जो हमदर्दी को सिर्फ अपनी ही क़ौम से विशिष्ट करना चाहते हैं।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 4 सफ़ा 216-217)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं:-

"एक अहमदी को क्योंकि सार्वजनिक रूप से इन्सानियत से हमदर्दी भी है और फिर मुस्लमानों से तो विशेष रूप से हमदर्दी होनी चाहिए कि वो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ओर संबद्ध होने वाले हैं। हमारा कर्तव्य है कि उनको उन अंधेरों से निकालें, उन तक अल्लाह तआला का संदेश पहुंचाएं कि मसीह और महदी की जमाअत में शामिल हो जाओ तो सफलता पाओगे। इसी तरह ईसाइयों और दूसरे धर्मों वालों को भी इस्लाम और अहमदियत का संदेश पहुंचाएं। एक दर्द के साथ उनके लिए दुआएं करें। उनको अल्लाह तआला का इबादतगुज़ार बनाएँ।"

(ख़ुतबा जुमा 4 जून 2004 ई०)

प्यारे अराकीन अंसारुल्लाह भारत! हमें चाहिए कि इन निर्देशों पर ख़ुद अमल करते हुए अपनी नस्लों को अहमदियत, ख़िलाफ़त से जोड़ें और इस्लाम अहमदियत की वास्तविक शिक्षा को अपने माहौल में पहुंचाने का प्रयास तेज़ करें। अल्लाह तआला हमें इस की का सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

Mobile : 9572858090, 9955553631

NEW MOBILE POINT

TABASSUM FANCY STORE

Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Mob: 9008510546

Akmal Tailor

Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

प्रत्येक अहमदी प्रत्येक बात का जो समय के ख़लीफ़ा की ओर से कही जा रही है अपने आपको सम्बोधित समझे।

समापन भाषण हज़रत ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला

(शेष भाग) अपने अंदरूनी जायज़े लेने की तरफ़ ज्जा दिलाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तव फ़रमाते हैं :-

"मेरी जमाअत समझ ले कि वे मेरे पास आए हैं इसी लिए कि बीज डाला जाए जिससे वो फलदार वृक्ष हो जाए।" अत: हर एक अपने अंदर ग़ौर करे कि इस का अंदरूना कैसा है और इस की आंतरिक अवस्था कैसी है। फ़रमाया "यदि हमारी जमाअत भी ख़ुदा न ख़्वास्ता ऐसी है कि इस की ज़बान पर कुछ है और दिल में कुछ है तो फिर ख़ातिमा बिलख़ैर न होगा इस उम्र को पहुंच के ख़ातिमा बिलख़ैर की भी फ़िक्र होती है। फ़रमाया यदि ज़बान पर कुछ है और दिल में कुछ है तो ख़ातिमा बिलख़ैर न होगा। फ़रमाया कि "अल्लाह तआला जब देखता है कि एक जमाअत जो दिल से ख़ाली है और ज़बानी दावे करती है। वह ग़नी है वो परवाह नहीं करता।"

(मलफ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 11 ऐडीशन 1984)

अत: हम हक़ीक़ी अंसार उस वक़्त बन सकते हैं जब उम्दा बीज बनें और उम्दा बीज बनने के लिए अल्लाह तआला और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के हुक्मों पर चलना और ज़माने के इमाम और मामूर का पूर्ण अनुसरण और आज्ञा-पालन करना ज़रूरी है और जब यह होगा तो फिर हम इस बीज के वे फलदार वृक्ष होंगे जो दुनिया को नेकियों के फल खिलाने वाले होंगे। हमारी करनी और कथनी का एक होना जहां हमें अल्लाह तआला का सानिध्य दिलाने वाला होगा वहां हमारी नसल की इस्लाह का भी ज़रीया होगा और हमें ये तसल्ली होगी कि हम अपनी नसलों में भी तक़्वा और नेकी की जड़ लगा कर जा रहे हैं। वह पैवंद लगा कर जा रहे हैं जिससे अगली नसल भी ख़ुदा तआला के साथ जुड़ कर वह फलदार वृक्ष बनेंगे जिन पर नेकियों के फल लगते हैं। इसी तरह दुनिया को भी ख़ुदा-ए-वाहिद की ओर लाने वाले बनेंगे ताकि युग के इमाम के हक़ीक़ी अंसार बन सकें।

अत: इस विषय को जितना खोलते जाएं इतना ही हमें अनुभव होता जाएगा कि अंसारुल्लाह का क्या महत्व है और हमने अपने अहद को किस प्रकार निभाना है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस विषय को अपनी तक़ारीर और मज्लिसों में इस शिद्दत से बयान फ़रमाया है जिससे स्पष्ट होता है कि आप अपने मानने वालों के क्या मयार देखना चाहते थे और यही मयार हैं जो जमाअती तरक़्क़ी में महत्वपूर्ण कारक सिद्ध हो सकते हैं।

एक अवसर पर नसीहत करते हुए हज़रत अक़्दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया :-

"हमेशा देखना चाहिए कि हमने तक़्वा व तहारत (संयम और पवित्रता) में कहाँ तक तरक़्क़ी की है। इस का मयार क़ुरआन है। अर्थात क़ुरआन-ए-करीम की जो शिक्षा है इस को देखो, उस को ग़ौर से पढ़ो, इस को समझो, इस के हुक्मों पर अमल करो तब पता लगेगा कि नेकी में कहाँ तक तरक़्क़ी की है। जब एक लाह-ए-अमल हमारे सामने मौजूद है। इस का मयार क़ुरआन है। फिर आप फ़रमाते हैं कि "अल्लाह

तआला ने मुत्तक़ी के निशानों में से एक निशान यह भी रखा है कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को दुनिया की घृणास्पद वस्तुओं से आज़ाद कर के इस के कामों का ख़ुद ज़िम्मेदार हो जाता है।" फिर आप ने फ़रमाया कि मुत्तक़ी की अलामत क्या है। बहुत सारी अलामतें हैं फिर एक अलामत का वर्णन करते हुए आप फ़रमाते हैं "जैसे कि फ़रमाया :- وَمَنْ يَتَّقِ اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّهٗ مَخْرَجًا ۙ وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ (अलतलाक़: 3-4) "अर्थात और जो अल्लाह से डरे उस के लिए वह नजात की कोई न कोई राह बना देता है और वह उसे वहां से रिज़्क़ देता है जहां से वह सोच भी नहीं कर सकता। आप फ़रमाते हैं "जो शख़्स ख़ुदा तआला से डरता है अल्लाह तआला हर एक मुसीबत में इस के लिए रास्ता मख़लिसी का निकाल देता है और इस के लिए ऐसे रोज़ी के सामान पैदा कर देता है कि इस की सोच में भी न हों। अर्थात यह भी एक अलामत मुत्तक़ी की है। मुत्तक़ी की अलामतों में से एक निशानी आप ने यह भी बताई है "कि अल्लाह तआला मुत्तक़ी को व्यर्थ ज़रूरतों का मुहताज नहीं करता।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 सफ़ा 12 ऐडीशन 1984)

अत: बहुत विचार योग्य बात है, ग़ौर करने की ज़रूरत है। सामान्य रूप से हम देखते हैं कि दुनिया में लोग इस बड़ी उम्र को जब पहुंचते हैं जब उनके बच्चे भी बड़े हो रहे होते हैं तो उनकी ज़रूरतों की उन्हें ज़्यादा चिंता शुरू हो जाती है, उनकी शिक्षा और विभिन्न ख़र्चों के लिए ज़्यादा सोचते हैं। चालीस साल की उम्र ऐसी है जब यह सोचें ज़्यादा शुरू हो जाती हैं और फिर कुछ लोग जो दुनिया में डूबे हुए होते हैं या जिनको ख़ुदा तआला पर विश्वास कम होता है वो इन ख़र्चों को पूरा करने के लिए विभिन्न उपाय और तरीक़े तलाश करते हैं चाहे जायज़ हों या नाजायज़ हों जो कई बार नाजायज़ भी होते हैं। जैसा कि यहां हम आम देखते हैं कि अपने ख़र्चों के लिए, बच्चों के ख़र्चों के लिए, मकान ख़रीदने के लिए या किसी और सांसारिक इच्छा को पूरा करने के लिए बहुत से लोग अपने टैक्स भी ग़लत तरीक़े से बचाते हैं और दूसरी किस्म के धोखे देने की भी कोशिश करते हैं यहाँ तक कि कई बार अहमदी भी यह काम करते हैं और फिर दुनियावी मामलों में ही नहीं बल्कि चंदों की अदायगी में भी अपनी आमद ग़लत बता देते हैं हालाँकि चंदों के बारे में तो उनके लिए स्पष्ट कर दिया गया है कि यदि शरह से चंदा नहीं दे सकते तो छूट ले लें। कोई मजबूरी नहीं है ऐसी कि ज़बरदस्ती चंदा लिया जाएगा और कह दें कि इस से ज़्यादा में अपने हालात की वजह से चंदा नहीं दे सकता लेकिन झूठ न हो अल्लाह तआला फ़रमाता है कि अगर तुम्हारे अन्दर तक़्वा है तो अल्लाह तआला ख़ुद इंतिज़ाम कर देगा या थोड़े में ऐसी बरकत दे देता है कि ग़ैर महसूस तरीक़े पर अख़राजात पूरे होने के सामान होते हैं और यह सिर्फ़ मुँह से कहने की बात नहीं है बल्कि बेशुमार अहमदी ऐसे हैं जो मुझे यह लिखते हैं कि हमने अल्लाह तआला पर विश्वास किया और अल्लाह तआला ने अप्रत्याशित रूप से हमारे लिए ऐसे सामान कर दिए कि हमारे ख़र्चे पूरे हो गए हमारी माली ज़रूरत पूरी हो गई।

बहुत सी एसी घटनाएँ हैं जैसा कि मैंने कहा मेरे पास मौजूद हैं। इस वक़्त इतना वक़्त नहीं है कि मैं वे समस्त यहां प्रस्तुत करूँ। यदा कदा वर्णन करता रहता हूँ। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस के स्पष्टीकरण में ख़ुद इस की उदाहरण दी है कि कुछ लोग समझते हैं कि झूठ बोले बिना काम नहीं चल सकता इसलिए झूठ बोलते हैं और फिर ढिटाई से मजबूरी का दूसरों के सामने इज़हार भी कर देते हैं कि हमने इसलिए झूठ बोला था। बड़ी ढिटाई से कह देते हैं।

(उद्धृत मलफ़ूज़ात जिल्द 1 सफ़ा 12 ऐडीशन 1984)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "यह बात कदापि सच्च नहीं।" यह बात कदापि सच्च नहीं। बिलकुल झूठ है। यह किस तरह हो सकता है कि एक तरफ़ तो अल्लाह तआला मुत्तक़ी

के परेशानी से निकलने के साधन प्रदान करने का वचन करे और दूसरी तरफ़ कुछ लोगों को कह दे कि तुम ग़लतबयानी और झूठ से काम लो और ख़ुद ही इस मुश्किल से निकल जाओ। यह ख़ुदा तआला की शान नहीं है। जिस ख़ुदा पर हम यक़ीन रखते हैं, हम ईमान रखते हैं इस की तो यह शान नहीं है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया "यह न समझो कि अल्लाह तआला कमज़ोर है वो बड़ा ताक़त वाला है। जब इस पर किसी बात में भरोसा करोगे तो वो ज़रूर तुम्हारी मदद करेगा। وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ (अलतलाक़ 4)" (मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 12 ऐडीशन 1984)

وَمَنْ يَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَهُوَ حَسْبُهٗ और जो अल्लाह पर तवक्कुल करे तो वह उस के लिए काफ़ी है। अत: अल्लाह तआला पर विश्वास ज़रूरी है और यह विश्वास बिना तक़्वा के पैदा नहीं हो सकता। यह ज़बानी जमा ख़र्च नहीं है कि मुँह से कह दिया कि हम अल्लाह तआला पर विश्वास करते हैं बल्कि तक़्वा की उच्च श्रेणियों को प्रपट करने की ज़रूरत है। अपनी इबादतों के मयार बुलंद करने की ज़रूरत है। अपने अख़लाक़ (शिष्टाचार) को उत्तम करने की ज़रूरत है। दूसरों के अधिकार पूर्ण करने की की ओर ध्यान देने की ज़रूरत है। दीन को दुनिया पर मुक़द्दम करने की ज़रूरत है। अत: यदि हम अपनी हालतों में वास्तव में ऐसा परिवर्तन उत्पन्न कर लें जब दीन दुनिया पर मुक़द्दम हो जाए तो यही वास्तविक तक़्वा (संयम) है और यही वह स्थान है जब अल्लाह तआला अपने बंदे के लिए काफ़ी हो जाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :- "जो लोग इन आयात के पहले संबोधित थे वे दीन वाले लोग थे। उनकी समस्त चिंताएँ केवल धार्मिक कार्यों के लिए थीं और सांसरिक मामले ख़ुदा के सुपुर्द थे। इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें तसल्ली दी कि मैं तुम्हारे साथ हूँ।"(मलफ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 12 ऐडीशन 1984)

अल्लाह तआला मुत्तक़ी के रास्ते की तमाम दुनियावी रोकें दूर कर देता है जो उस के दीन के काम में रोक हों।

अत: यदि दुनियावी कामों की परवाह न करते हुए नमाज़ों की वक़्त पर अदायगी हम कर रहे हैं और इसी तरह दूसरे दुनयवी कामों की परवाह न करते हुए जमाअती कामों और दीन के कामों को तर्जीह दे रहे हैं तो वह सब ताक़तों का मालिक ख़ुदा फ़रमाता है मैं तुम्हारे साथ हूँ, तुम्हारी चिंताओं को दूर करूँगा। अत: इन्सान ने ख़ुदा तआला की क्या मदद करनी है, अल्लाह तआला है जो हमें दीन की ख़िदमत का मौक़ा देता है, हमारी नेकियों के हमें अज्र देता है, हमारी ज़रूरीयात पूरी फ़रमाता है और फिर इन तमाम नवाज़िशों के बाद हमें अपने दीन के मददगारों में शामिल करता है। यह भी ऐलान फ़र्मा देता है। कितना मेहरबान है हमारा ख़ुदा। कितना अधिक दयालू है हमारा ख़ुदा। इस का हम कभी पता ही नहीं कर सकते। अत: हमें चाहिए कि हम अल्लाह तआला के हक़ीक़ी शुक्रगुज़ार बंदे बनते हुए, उस के हुक्मों पर चलते हुए, तक़्वा की राहों पर क़दम मारते हुए अपनी ज़िंदगियां गुज़ारने वाले बनें और यही हमारे हक़ीक़ी अंसार होने की रूह है। अल्लाह तआला हम सबको इस का सामर्थ्य प्रदान करे। अब दुआ कर लें। दुआ

(दुआ के बाद हुज़ूर ए अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया एक मिनट ज़रा ठहर जाएं। लज्ना की हाज़िरी जो दोबारा लज्ना ने भेजी है उनकी हाज़िरी छ: हज़ार आठ सौ तीस है और अंसारुल्लाह की हाज़िरी यह अभी बता ही चुके हैं। अस्सलामो अलैकुम व रहमतुल्लाह व बरकातहु

(सहरोज़ा अलफ़ज़ल इंटरनैशनल यक्म नवंबर 2022 पृष्ठ 6 से 8) **समाप्त**